ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय-हिन्दी(काव्य-खंड)

दिनांक—26/04/2021 साखियाँ-कबीरदास

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी ई आर टी पर आधारित

साखियाँ

-कबीरदास

ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ।

सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोइ। 7।

भावार्थ : कर्मों के महत्त्व को बताते हुए कवि कहते हैं कि ऊँचे कुल में जन्म लेने मात्र से कोई व्यक्ति बड़ा नहीं बन जाता है। इसके लिए अच्छे कर्म करने पड़ते हैं। इसी का उदाहरण देते हुए कबीर कहते हैं कि सोने के पात्र में शराब भरी हो तो भी सज्जन उसकी निंदा ही करते हैं।
~~~~~~~~~~

शब्दार्थ : **ऊँचा कुल**-अच्छा खानदान । **जनमिया**-पैदा होकर। **करनी**-कर्म । **सुबरन**-सोने का। **कलस**-घड़ा। **सुरा**-शराब। **निंदा**-बुराई। **सोइ**-उसकी।

सबद (पद)

मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।

ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।

ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।

खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।

कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

भावार्थ : मनुष्य जीवन-भर ईश्वर को पाने का उपाय करता है तथा नाना प्रकार की क्रियाएँ करता है, पर उसे प्रभु के दर्शन नहीं होते हैं। इसी संबंध में स्वयं निराकार ब्रह्म मनुष्य से कहते हैं कि हे मनुष्य तूने मुझे कहाँ खोजा, मैं तो तुम्हारे पास में ही हूँ। मैं किसी मंदिर-मस्जिद या देवालय में नहीं रहता हूँ न किसी तीर्थ स्थान पर। मैं किसी पाखंडी क्रियाओं से भी नहीं मिल सकता। जो मुझे सच्चे मन से खोजता है उसे मैं पल भर में ही मिल सकता हूँ क्योंकि मैं तो हर प्राणी की प्रत्येक साँस में मौजूद हूँ। मुझे खोजना है तो अपने मन में खोज लो।

शब्दार्थ : **मोको**-मुझको। **बंदे**-मनुष्य। **देवल**-देवालय, मंदिर। **काबा**-मुसलमानों का तीर्थ स्थल । **कैलास**-कैलाश पर्वत जहाँ भगवान शिव का वास माना जाता है। **कोने**-किसी। **क्रिया**-कर्म-मनुष्य द्वारा ईश्वर की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले आडंबर। **योग**-योग साधना। **बैराग**-वैराग्य। **तुरते**-तुरंत। **मिलिहौं**-मिलेंगे। **तालास**-खोज।